No. of Printed Pages : 5

MSK-008

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम. एस. के.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2022

एम.एस.के.-008 : संस्कृत साहित्य : गद्य, पद्य एवं नाटक

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रश्न-पत्र में **तीन** खण्ड हैं। सभी खण्ड करना अनिवार्य है। खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड-क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 3×10=30

(क) अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी त्रयीव नीतांग गुणेन विस्तरम्।
अगाहताष्टादशतां जिगीषया नवद्वयदीप पृथग्जयश्रियाम्॥

अथवा

विधाय मूर्ति कपटेन वामनीं
स्वयं बलिध्वंसिबिडम्बिनीमयम्।
उपेत पार्श्वश्चरणेन मौनिना नृपः
पतङ्ग समधत्त पाणिना॥

(ख) सन्तानवाहीन्यपि मानुषाणां
दुःखानि सम्बन्धिवियोगजानि।
दृष्टे जने प्रेयसि दुःसहानि
स्रोतः सहस्रैरिव संप्लवन्ते॥

अथवा

न किञ्चिदपि कुर्वाणः सौख्यैर्दुःखान्यपोहति।
तत्तस्य किमपि द्रव्यं यो हि यस्य प्रियो जनः॥

(ग) जानन्ति हि गुणान् वक्तुं तद्विधा एव तादृशाम्।
वेत्ति विश्वम्भरा भरां गिरीणां गरिमाश्रयम्॥

अथवा

नक्षत्रभूः क्षत्त्रकुलप्रसूतेर्युक्तो नभोगैः खलुभोगभाजः।
सुजातरूपोऽपि न याति यस्य समानतां कांचन काञ्चनाद्रिः॥

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 4×10=40

(क) महाकवि श्रीहर्ष के व्यक्तित्व और कृतित्व का वर्णन कीजिए।

अथवा

'नैषधीयचरितम्' के प्रथम सर्ग का सार अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) संस्कृत नाट्य साहित्य की परम्परा में महाकवि भवभूति के स्थान की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'उत्तररामचरितम्' के 'तृतीय अङ्क' का सार और विशेषताएँ लिखिए।

(ग) 'कादम्बरी' के अनुसार महाश्वेता के व्यक्तित्व की विशेषताओं को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

अथवा

कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त) में प्रयुक्त भाषाशैली पर प्रकाश डालिए।

(घ) त्रिविक्रमभट्ट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नलचम्पू के अनुसार राजा नल के गुणों को अपने शब्दों में लिखिए।

खण्ड-ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 2×15=30

(क) कतरुमरूतामृषीणां गन्धर्वाणां गुह्यकानामप्सरसां वा कुलमनुगृहीतं भगवत्या जन्मना/किमर्थं वास्मिन्कुसुमसुकुमारे नवे वयसि व्रतग्रहणम्। क्वेदं वयं:। क्वेयमाकृति:। क्क चायं लावण्यातिशय: क्वेयमिन्द्रियाणामुपशान्ति:। तददभुतमिव मे प्रतिभाति। किं निमित्तं वानेकसिद्धसाध्यसबाधानि।

(ख) प्रभातचन्द्रमिव पाण्डुतया परिगृहीतम्, निदाघगङ्गाप्रवाहमिव क्रशिमानमागतम्, अन्तर्गतानलं चन्दनविटपमिव म्लायन्तम्, अन्यमिवादृष्टपूर्वमिवा-परिचितमिव ग्रहगृहीतमिवोन्मत्तमिव छलितमिवान्धमिव बधिरमिव मूकमिव विलासमयमिव, मदनमयमिव परायत्तचितवृत्ति परां कोटिमधिरूढं मन्मथावेशस्यानभिज्ञेयपूर्वाकारं तमहमद्राक्षम्।

(ग) यस्मिन्ननवरतधर्मकर्मोपदेशशान्तसमस्तव्याधि-व्यति करा: पुरुषायुषजीविन्य: सकलसंसारसुखभाज: प्रजा:। तथाहि कुष्ठयोगी गन्धिकापणेषु, स्फोटप्रवादो वैयाकरणेषु, सन्निपातस्तालेषु, ग्रहसंक्रान्तिर्ज्योति: शास्त्रेषु, भूतविकारवाद: सांख्येषु, क्षयस्तिथिषु गुल्मवृद्धिर्वनभूमिषु, गलग्रहोमत्स्येषु, गण्डकोत्थानं पर्वतवनभूमिषु, शूलसम्बन्धश्चण्डिकायतनेषु दृश्यते न प्रजासु।